लेख

1

सतत एवं समग्र मूल्यांकन अभिप्राय एवं कार्यविधि

संध्या संगई*

सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक आवश्यक कदम है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम में यह अपेक्षा की गई है कि 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग में आने वाले सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाए। इसके अतिरिक्त अधिनियम में यह भी उल्लेखित है कि सभी विद्यार्थी एक वांछित उपलब्धि स्तर को प्राप्त करें। इस दिशा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 'सीखने के प्रतिफल' का निर्माण विषयवार तथा कक्षावार किया है। यह जानने के लिए कि विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी इन प्रतिफल को उपलब्ध कर पा रहे हैं, सतत एवं समग्र मूल्यांकन एक उपयुक्त विधा है। इस लेख के माध्यम से शिक्षकों के साथ एक संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया है ताकि उन्हें सरल शब्दों में सतत एवं समग्र मूल्यांकन की अवधारणा तथा उसके निष्पादन के बारे में सही जानकारी मिल सके।

भूमिका

बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए शिक्षण व आकलन का साथ-साथ चलना अति आवश्यक है अर्थात् कक्षा की पठन-पाठन प्रक्रिया में आकलन सन्निहित होना चाहिए। शिक्षण प्रक्रिया के समय अध्यापक विद्यार्थियों से बातचीत करते हैं, अध्यापन के दौरान उनके हाव-भाव भी देखते हैं, बीच-बीच में प्रश्न भी पूछते हैं। यह सब करते हुए वे इस बात से अवश्य परिचित होते हैं कि कौन-से बच्चे कक्षा कार्यकलाप में भाग ले रहे हैं और अध्यापक द्वारा की गई चर्चा का अर्थ ग्रहण कर पा रहे हैं। साथ ही साथ वे इस बात से भी अवगत होते हैं कि ऐसे कौन-से बच्चे हैं जो कक्षा में की जा रही चर्चा में भाग लेने में अपने आपको असमर्थ पा रहे हैं। इस प्रकार का अनौपचारिक आकलन शिक्षकों को उनके शिक्षण के संबंध में बहुत सहायता करता है। वे अपने छात्र-छात्राओं के अधिगम स्तर तथा उनकी सीखने की क्षमता को समझ पाते हैं तथा उनके द्वारा प्रयोग में लाई जा रही शिक्षण-विधियों

* *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली – 110016

की प्रभावशीलता का भी उन्हें अहसास होता है। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन के कक्षा कार्यकलापों पर ध्यान देने से अध्यापक प्रत्येक बच्चे को आवश्यकतानुसार सीखने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस लेख के माध्यम से लेखक का प्रयास शिक्षकों के साथ एक संवाद स्थापित करने का है जिससे वे सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रक्रिया को कक्षा में आसानी से एवं सही अर्थ में प्रयोग कर सकें। इस संवाद में तारतम्यता लाने के लिए इसे निम्नलिखित खंडों में प्रस्तुत किया गया है –

- सतत एवं समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) से क्या अभिप्राय है?
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन से क्या लाभ हैं?
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन को कक्षा में किस प्रकार क्रियान्वित किया जाए?

सतत एवं समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) से अभिप्राय

आइए, एक उदाहरण के माध्यम से हम सतत एवं समग्र मूल्यांकन को समझने का प्रयास करें। हम सभी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि 'सीखना' एक सतत प्रक्रिया है। 'सीखने' की इस प्रक्रिया में बहुत से स्रोत होते हैं उदाहरण के लिए, शिक्षक, पाठ्य-पुस्तकें तथा अन्य पठन सामग्री, सीखने के दौरान हुए अनुभव,सहपाठियों तथा अन्य संपर्क में आने वाले लोगों से बातचीत, कुछ क्रियाकलाप इत्यादि। अनेक बार ऐसा भी देखने में आता है कि कोई विषय आरंभ में समझ नहीं आता लेकिन धीरे-धीरे प्रयासरत रहने से उसकी समझ बन जाती है। ऐसे में यदि इस सीखने की प्रक्रिया को सतत रूप से न देखा जाए और प्रारंभिक मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों को कम आंका जाए, तो ऐसा आकलन शायद न्यायसंगत नहीं होगा। साथ-ही-साथ यदि सतत रूप से आकलन की प्रक्रिया से शिक्षक दूर रहें तो यह भी संभव है कि वह विद्यार्थी द्वारा सीखने की प्रक्रिया मे आने वाली कठिनाईयों को नहीं समझ पाए। यदि इन कठिनाईयों का समय पर उचित प्रकार से निदान नहीं किया जाएगा तो संभवत: बच्चे की मूलभूत दक्षताएँ व क्षमताएँ, कमज़ोर ही रह जाएँगी जिसके गंभीर परिणाम उसकी बाद की प्रगति में बाधा बनेंगे। सीखने के प्रयास पर यदि उन्हें समुचित फ़ीडबैक नहीं दी जायेगी तो उन्हें भी अपने गुणों एवं कमज़ोरियों की जानकारी नहीं होगी।

यह तो हुई 'सतत' मूल्यांकन की बात। आइए समग्र मूल्यांकन को भी समझने का प्रयास करें जो सतत एवं समग्र मूल्यांकन का दूसरा महत्वपूर्ण घटक है। साधारणत: विकास के तीन पहलू मुख्य रूप से माने जाते हैं – संज्ञानात्मक (cognitive), भावात्मक तथा मनोभौतिक (affective and psychomotor) सीखने की कोई भी प्रक्रिया केवल एक पहलू तक सीमित नहीं होती। तीनों पहलू आपस में एक-दूसरे से संबंधित हैं तथा एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक विद्यार्थी किसी एक विषय वस्तु को भली प्रकार समझ पाता है तो अध्यापक उसे एक अवसर प्रदान करता है कि वह अपने साथियों को भी उस विषय-वस्तु को अच्छी प्रकार समझाए। ऐसे में जब वह अपने साथियों के साथ वार्तालाप करता है तो अध्यापक के सामने उसके विभिन्न पहलू प्रकट होते हैं, उदाहरणार्थ – विषय-वस्तु के बारे में उसकी समझ, साथियों को साथ लेकर चलने की रुचि,

क्षमता आदि। अध्यापक का दायित्व है कि वह विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान दें तथा सभी पहलुओं पर किए गए आकलन को विद्यार्थियों से अवश्य साझा करें एवं यदि आवश्यकता हो तो अभिभावकों को भी उचित समय पर महत्वपूर्ण जानकारी दें। इस प्रकार यह बात निश्चित रूप से तर्कसंगत प्रतीत होती है कि सतत एवं समग्र मूल्यांकन विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आकलन की एक उचित व्यवस्था है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 भी इस ओर संकेत करती है कि विद्यालयों में प्रयोग की जाने वाली आकलन प्रक्रिया अपर्याप्त है क्योंकि यह छात्र/छात्राओं की दक्षताओं व क्षमताओं के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं देती। शिक्षकों को चाहिए कि वे विभिन्न प्रकार के उपकरणों तथा तरीकों का प्रयोग कर बच्चों के विकास तथा अधिगम का आकलन समस्त रूप से करें। इन उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे कक्षा के किए गए सीखने-सिखाने की समूची प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकें। 'शिक्षा का अधिकार' अधिनियम के अंतर्गत भी सतत एवं समग्र मूल्यांकन का अभिप्राय बच्चों के विकास की ओर ध्यान देना बताया गया है जिससे वे अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। प्रत्येक बच्चे की प्रगति का आकलन उसी की पूर्व स्थिति से करना चाहिए और बच्चों की तुलना एक-दूसरे से नहीं करनी चाहिए। लेकिन इसके लिए यह अति आवश्यक है कि सभी बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुसार सीखने के अवसर उपलब्ध कराये जाएँ। यहाँ यह कहना भी उचित होगा कि किसी भी कक्षा में सभी बच्चे एक से नहीं होते। उनकी सीखने की गति तथा तरीके भिन्न-भिन्न होते हैं। ऐसे में अध्यापकों का यह दायित्व बनता है कि वे यथा संभव सभी विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकतानुरूप सीखने के अवसर तथा आवश्यक सामग्री उपलब्ध करायें।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) से क्या लाभ है?

सतत एवं समग्र मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उनका निरंतर आकलन करना तथा उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार सहायता प्रदान करना है। वाइगोत्स्की के सिंद्धात Zone of Proximal Development (ZPD) के द्वारा प्रत्येक बच्चे के वास्तविक अधिगम स्तर तथा अपेक्षित अधिगम स्तर में अंतर होता है। बच्चे अपने प्रयासों के द्वारा एक अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, लेकिन यदि उन्हें उचित सहायता तथा मार्गदर्शन मिल जाए तो वे उस स्तर से ऊपर जा सकते हैं। इस क्षेत्र को ZPD कहते हैं।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक यह आकलन कर सकता है कि बच्चे कितना कार्य बिना किसी की मदद के कर सकते हैं, कहाँ उन्हें कुछ सहायता की आवश्यकता है और कहाँ शिक्षक को स्वयं प्रयास करके बच्चों की सीखने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करना हैं। ऐसी रणनीति के द्वारा वे विद्यार्थियों की क्षमताओं एवं अंतर्निहित गुणों का पूरी तरह विकास कर सकते हैं।

"The Zone of Proximal Development has been defined as the distance between the actual development level as determined by independent problem solving and level of potential development as determined through problem solving under adult guidance, or in collaboration with more capable peers."

(Lev Vygotsky)

http://www.simplypsychology.org/zone-f-Proximal-Development.html

उपर्युक्त बातों के पश्चात् सतत एवं समग्र मूल्यांकन के शिक्षण में लाभ इस प्रकार कहे जा सकते हैं —

- यह बच्चों को रचनात्मक रूप से उनके प्रदर्शन के बारे में जानकारी देता है जिसे वह आने वाले समय में अपने प्रयासों से बेहतर बना सकते हैं।
- यह शिक्षकों व अध्यापकों का भी मार्गदर्शन करता है जिससे वह अपनी कक्षा के क्रियाकलापों को बच्चों की योग्यता तथा आवश्यकता के अनुसार ढाल सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर विशेष सहायता चुनिंदा बच्चों को दे सकते हैं।
- यह शिक्षकों को इस प्रकार की स्वायतता देता है कि वे आकलन संबंधी अपनी परियोजना स्वयं बना सकें।
- यह बच्चों पर परीक्षा संबंधी बोझ एवं चिंताओं का निदान करता है।

संक्षेप में सतत एवं समग्र मूल्यांकन बच्चों की संपूर्ण प्रगति के लिए किया जाने वाला एक निंरतर प्रयास है, जिसका अर्थ केवल 'अंक' या 'ग्रेड' देना नहीं हैं, अपितु संक्षेप में बच्चे के बारे में एक समग्र जानकारी देना है तथा समय-समय पर उनके सीखने के स्तर में आने वाले परिवर्तनों की जानकारी देना। इस सभी के साथ उन्हें यह भी बताना है कि वे अपनी अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ाएँ।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन का क्रियान्वयन कैसे हो?

सतत एवं समग्र मूल्यांकन को क्रियान्वित करने के कई तरीके हो सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस स्तर की कक्षाओं के लिए आकलन योजना तैयार कर रहे हैं, उदाहरणार्थ प्रारंभ की कक्षाओं में (कक्षा 1, 2, 3) में अध्यापक द्वारा कराए जा रहे भिन्न-भिन्न कार्यकलापों में बच्चे किस प्रकार भाग लेते हैं तथा उनका प्रदर्शन कैसा है – बच्चों की सीखने की प्रगति जानने का यह एक अच्छा तरीका है, जिसे कक्षा-अध्यापक के अवलोकन के आधार पर जाना जा सकता है।

इसी प्रकार यदि कक्षा चार से आठ तक की बात की जाए तो आकलन के विभिन्न तरीके सामने आते हैं जैसे – पेपर, पेंसिल, टेस्ट, समूह-कार्य कुछ रचनात्मक प्रकार का कार्य जिससे बच्चों को पढ़ाई आनंदायक लगे और उनकी अन्य प्रतिभाओं का विकास हो। इससे बच्चों के समूचे व्यक्तित्व के बारे में अध्यापक को जानकारी प्राप्त होगी।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत आकलन योजना बनाते हुए अध्यापकों को अग्रलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए –

आकलन का उद्देश्य सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाना है

साधारणत: सतत एवं समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत अध्यापक तरह-तरह का प्रोजेक्ट कार्य देते हैं जिनका संबंध कक्षा में चल रहे विषयों की विषय-वस्तु या अपेक्षित अधिगम के उद्देश्यों व लक्ष्यों से नहीं होता। वस्तुत: सतत एवं समग्र मूल्यांकन के प्रति अभिभावकों की शिकायत इसी प्रकार के कार्य से आती है क्योंकि कार्य देते हुए अध्यापक एक ही प्रकार का दायित्व सभी बच्चों को दे देते हैं बिना यह आँके कि प्रत्येक बच्चा उसे करने में सक्षम है या नहीं। इसके स्थान पर यदि कक्षा में कुछ ही प्रयोगात्मक कार्य किए जाएँ और सभी बच्चों को शामिल किया जाए तो अध्यापक अवश्य ही उनके सीखने के स्तर का अनुमान लगा पाएँगे। उदाहरण के लिए, यदि कक्षा एक व दो के बच्चों को 'पानी' की विशेषताएँ को समझाना है तो यह प्रयोगात्मक रूप से आसानी से किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, पानी का अपना रंग नहीं है, जैसा रंग मिलाओ पानी उसी रंग का हो जाता है, पानी का अपना आकार नहीं है जैसे बर्तन में डालो वैसा ही आकार ले लेता है आदि-आदि। सभी बच्चे इस प्रकार के पठन-पाठन में शामिल हो सकते हैं। बच्चे ऐसी धारणाओं (concepts) को समझ पा रहे हैं या उन्हें और अधिकाधिक क्रियाकलापों के माध्यम से सिखाने की आवश्यकता है। यह निर्णय कक्षा के अध्यापक का होगा कि वह किस प्रकार आकलन व सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जोड़े और सभी बच्चों को कक्षा में चल रहे पठन-पाठन में भाग लेने के लिए उत्साहित करें।

आकलन के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों पर तथा कार्यभारों का प्रयोग किया जाना चाहिए

यह बात सर्वविदित है कि बच्चों के सीखने के तरीके तथा सीखने की गति समान नहीं होती। साथ-ही-साथ उनके द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान व समझ का आकलन भी किसी निश्चित समय पर तथा एक पैमाने से नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए बच्चों को तरह-तरह के अवसर दिए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, कुछ बच्चे बोलने में अधिक अच्छे होते हैं तो कुछ बच्चे शर्मीले होते हैं और बोलने में हिचकते हैं। इसी प्रकार कुछ बच्चे पेपर-पेंसिल टेस्ट आसानी से कर लेते हैं तो कुछ बच्चे कंक्रीट सामग्री (concrete material) से अच्छी तरह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पाते हैं। सभी बच्चों को धीरे-धीरे सब कुछ सीखना चाहिए और विभिन्न प्रकार की आकलन की विधियों से शिक्षक यह पता लगा सकते हैं कि अमुक बच्चे की समझ कैसी है तथा उसकी कौन-सी योग्यताएँ विकसित हैं तथा कहाँ प्रयास की आवश्यकता है। दिन-प्रतिदिन के आकलन का अर्थ कभी भी रिकॉर्ड रखना नहीं है परंतु अपने अनुभव के आधार पर शिक्षक आवश्यक फ़ीडबैक दे सकते हैं और बच्चों को और अवसर देकर उनकी ऐसी योग्यताएँ जो विकसित नहीं हैं लेकिन अंतर्निहित हैं, उनका विकास कर सकते हैं

आकलन निष्पक्ष तथा सटीक होना चाहिए

आकलन का सीधा संबंध सीखने-सिखाने से होना चाहिए। किसी निश्चित अवधि के उपरांत किए जाने वाले आकलन की विभिन्न कड़ियों को यदि जोड़ा भी जाए तो वह बच्चे की निरंतर सीखने की

प्रक्रिया व प्रगति को उचित प्रकार से प्रदर्शित नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चे के दिन-प्रतिदिन के अवसरों व अनुभवों के अनुरूप सीखने के वातावरण का निर्माण किया जाए और विभिन्न प्रकार के उपकरणों व विधियों के माध्यम से शिक्षक बच्चे के उन कौशलों का आकलन करें जिन्हें सिखाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए शिक्षक प्रोजेक्ट कार्य, पोर्टफ़ोलियो, मौखिक रूप से किए गए प्रस्तुतीकरण को भी आधार बना सकता है। उपकरणों का चुनाव विषय-वस्तुक तथा शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता पर भी निर्भर करेगा।

उपर्युक्त इंगित सुझावों के अतिरिक्त और भी बहुत से कारण एवं घटक होंगे जो सतत एवं समग्र मूल्यांकन के निष्पादन को प्रभावित करेंगे। इसीलिए शिक्षक को यह स्वायत्ता दी जानी चाहिए कि वह एक बाल-केंद्रित तरीके से बच्चों का आकलन करे तथा उस पर यथोचित कार्यवाही करे।

बच्चों को उनके कार्य के आधार पर फ़ीडबैक देना

सतत एवं समग्र मूल्यांकन का एक मुख्य उद्देश्य बच्चों को उनकी प्रगति के आधार पर फ़ीडबैक देना भी है। यह फ़ीडबैक अभिभावकों से भी साझा की जाना चाहिए, ताकि सभी पक्ष अपनी-अपनी भूमिका व ज़िम्मेदारी का वहन करते हुए बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार की ओर योगदान दे सकें।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन के निष्पादन संबंधी उपकरण

यद्यपि सही मापने/मायने में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत आकलन के लिए अध्यापक विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग कर सकता है। इन उपकरणों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके उन्हें कक्षा के बच्चों के अनुसार तैयार भी किया जा सकता है। इस दिशा में कुछ प्रचलित उपकरण निम्नलिखित हैं —

- शिक्षक द्वारा कक्षा अवलोकन— पूर्ण कक्षा का, छोटे समूहों में, प्रत्येक बच्चे का
- पेपर - पेंसिल टेस्ट तथा दत्तकार्य (assignments)
- विद्यार्थियों की प्राप्ति संबंधी पत्राधान (Post folio)
- अनुष्ठान निर्देशों (Rubrics) का निर्माण
- आकलन संबंधी विशेष कार्य तैयार करना उनके आधार पर बच्चों का आकलन करना

ये विशेष कार्य साधारणत: विषयानुसार व कक्षानुसार होते हैं।

सीखने के प्रतिफलों का निर्माण

सतत एवं समग्र मूल्यांकन के पूरी तरह से निष्पाादित न होने का एक मुख्य कारण 'सीखने के प्रतिफलों (Learning outcomes) का उपलब्ध न होना माना जाता रहा है। शिक्षक भी चाहते हैं तथा शैक्षिक तंत्र से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वे विषय-वार तथा कक्षा-वार अधिगम परिणामों की एक ऐसी सूची तैयार करें जैसे अधिकाधिक तौर पर विभिन्न हितधारकों (stakeholders) में साझा किया जा सके। शिक्षक भी इस सूची के आधार पर बच्चों की प्रगति को चिह्नित कर पाएँगे तथा इस बात का अनुमान लगा पाएँगे कि कौन-सा बच्चा कितना सीख पा रहा है और किस प्रकार उसे सहायता दी जानी चाहिए। इस संबंध में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान

और प्रशिक्षण परिषद् ने एक दस्तावेज़ तैयार किया है जिसका शीर्षक है – प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल इस दस्तावेज़ में प्रारंभिक स्तर तक (कक्षा एक से आठ) विभिन्न विषयों में कक्षावार सीखने के अपेक्षित प्रतिफल दिए गए हैं तथा उन विषयों का पठन-पाठन कैसे हो इससे संबंधित प्रक्रियाएँ भी बताई गई हैं।

जैसा हम सभी जानते हैं बच्चों की सीखने की गति व क्षमता अलग-अलग होती है इसीलिए यह आवश्यक है कि उनका आकलन इस प्रकार से किया जाए कि उनके सीखने के स्तर की जानकारी मिल सके। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार किए गए सतत एवं समग्र मूल्यांकन की प्रतिमान सामग्री के अनुसार बच्चों की प्रगति के चार स्तर माने जा सकते हैं जिसकी रेंज 'बच्चे को पूर्णत: शिक्षक के व्यक्तिगत ध्यान की आवश्यकता' से लेकर 'बच्चे स्वयं सब पूर्ण रूप से करने में सक्षम है' तक है। इस प्रकार से बच्चों का आकलन सटीक तथा स्पष्ट हो सकता है।

निष्कर्ष

सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा जगत में प्रकार स्तर पर प्रचलित है, चाहे वह पूर्व-प्राथमिक स्तर हो अथवा उच्च शिक्षा स्तर। प्रत्येक स्तर पर इसके आयाम तथा निष्पादन के तरीकों में विविधता का आना स्वाभाविक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1992 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005 तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत विद्यालय स्तर इस प्रकार प्रणाली के उपयोग को विशेषत: रेखांकित किया गया है इस लेख के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बहुत जटिल दिखने वाली सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली को शिक्षक आसानी से समझ सकते हैं तथा इसका प्रभावशाली उपयोग कर बच्चों का शैक्षणिक स्तर सुधारने में बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2013. *कॉन्टीनियस एंड कम्परहेंसिव एव्ल्यूशन सी.सी.ई. फ़ॉर प्राइमरी स्टेज*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009.

रूही, फातिमा. 2006. 'वायॅ सी.सी.ई. स्टिल ए चैलेंज'. *द प्राइमरी टीचर*. वॉल्यूम XXXX अंक 2 और 3 (अप्रैल और जुलाई 2015) एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

शर्मा, संतोष. 2014. *वाट इज़ आर.टी. ई. – ए हैंड बुक फ़ॉर टीचर्स*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

संगई, संध्या. 2006. 'नो डिटेन्शन पॉलिसी – वायॅ डु वी नीड इट' *द प्राइमरी टीचर*. वॉल्यूम XXXX अंक 2 और 3 (अप्रैल और जुलाई 2015). एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.